क्या आप जानते हैं ?

ॐ शनी की साढ़ेसाती के विषय में बहुत भ्रांतिया हैं और लोग इससे बहुत डरते हैं । जबकि शनी कर्मकारक होने से साढ़ेसाती के दौरान कर्मयोग की शिक्षा देता हैं और एक अच्छे शिक्षक की भाँती व्यक्ति को जीवन की सच्चाईयों से अवगत करवाता हैं । परन्तु आलसी, कामचोर, अपनी जिम्मेदारियों से बचने वाले लोग इसके दंड के भागी बनते हैं ।

ॐ सूर्य को सितारा कहा जाता हैं । हमारी आकाश गंगा में सूर्य को छोड़कर किसी भी ग्रह में गतिशीलता अथवा क्रिया नही होती हैं और अपनी ईन्ही क्रियाओं के लिये सूर्य चमकता हैं और उसे सितारा कहा जाता हैं । एसा ही एक और सितारा जिसे अल्फा सैन्टौरी कहा जाता हैं । अथवा दूसरा सूर्य कहा जाता हैं हमारी पड़ौस की आकाश गंगा में हैं उसकी हमारे सूर्य से दूरी ४ . ४ प्रकाश वर्ष हैं ।

ॐ महिलाओं को शनी की साढ़ेसाती का असर नही होता हैं । क्योंकि प्राचीन समय से ही मंहिलाऐं आजिविका के कार्य नही करती थीजबकि शनी कर्मकारक होने से कर्मो का हिसाब लेता हैं और कर्म की शिक्षा देता हैं । आजिविका एक कर्मयोग हैं और अब मंहिलाऐं भी ये कार्य करती हैं और इन कर्म करने वाली महिलाओं पर शनी की साढ़ेसाती प्रभावी होती हैं ।

ॐ षडबल ग्रहों का मूलबल होता हैं । जैसे पुरूष का बल उसकी बाँहो में, स्त्री का बल उसके रूठने में और बालक का बल उसके रोने में होता हैं वैसे ही ग्रहों का बल उनके षडबल मे होता हैं । षडबल के अनुसार ही ग्रह अपना फल अपनी दिशा से, अपने समय से, अपने स्थान से और अपनी मात्रा से देता हैं ।

ॐ शनी दुख का देवता हैं । इसलिये जब ये कुण्डली में बलवान होता हैं तो व्यक्ति के जीवन से दुख कम कर देता परन्तु सुख को बढ़ाता नही हैं । सुख से शनी का कोई लेना देना नही हैं। सुख का देवता तो गुरु हैं । यम और यमुना, शनी के भाई बहन हैं ।

ॐ ३६ गुण, ग्रह योग, नाड़ी दोष । ये सब वर-वधु की कुण्डली मिलान के उपकरण हैं । इससे वर - वधु के स्वभाव और रूचि आदि के विषय में पता चलता हैं परन्तु जीवन के उतार चढ़ाव कुण्डली का पुर्ण अध्यन करने से ही पता चलते हैं । केवल ३६ गुण, ग्रह योग, नाड़ी दोष के मिल जाने से ही सम्पुर्ण जीवन सुखमय होगा, एसा नही कहा जा सकता हैं ।

ॐ काल सर्प योग, राहु - केतु के बीच में सभी ग्रहों के आ जाने से बनता हैं । ये योग व्यक्ति को स्वनिर्मित और कर्मठ बनाता हैं । कुण्डली में इसके होने से जीवन के प्रथम भाग मे भले ही व्यक्ति दुख और कठोर परिश्रम से जीवनयापन करता हैं परन्तु जीवन के उतरार्ध्द में उसे सफलता मिल जाती हैं ।

ॐ पितर दोष, लग्नेश के त्रिक स्थानों ६, ८, १२ अथवा त्रिकेशों से संबंध बनाने से बनता हैं । त्रिकेशों ६, ८, १२ के स्वामियों के लग्न स्थान से संबंध बनाने से भी ये प्रकट होता हैं । राहु - केतु की विशेष स्थिति भी इसे प्रकट करती हैं । कुण्डली में इसके प्रकट होने से व्यक्ति रोगी, कर्ज में डूबा हुआ, अभावों से जूझने वाला और बेवजह के व्यय से परेशान रहता हैं ।

ॐ ज्योतिष से आने वाले समय को बदला जा सकता हैं । इसलिये कि दवा और उपाय का मतलब ही उसके ईस्तेमाल करने से हैं । हालाकि ये बहुत वाद विवाद का विषय हैं परन्तु ज्योतिष को वेदों के नेत्र कहा गया हैं अब नेत्र जो देखेगें और उसमें कुछ अशुभ अथवा अरूचिकर दिखेगा तो उससे बचने का प्रयत्न भी सहज ही होगा और अगर उसके उपाय ना हो तो ज्योतिष का जन्म ही क्यों होता ?

ॐ सूर्य की सिंह राशि हैं । सिंह राशि अति बलवान और महाराजा राशि हैं । सूर्य को ग्रह संसद में राजा की पदवी हासिल है, इसलिये स्वंत ही इसकी राशि राजा का आसान हो गयी और यह राशि बलवान राशि मानी जाती है । इसे भी किसी ग्रह के शुभ प्रभाव की जरूरत नही होती, हो जाये तो सोने पे सुहागा बहरहाल क्योंकि इसका नामकंरण ही सिहं हैं और इसका चिन्ह भी सिंह है इसलिये इसके जातक सिंह की तरह शूरवीर, गर्जन करने वाले तथा खुले मुँह के होते हैं अर्थात् जो भी हो मुँह पर कह देते हैं दिल में रखना इनके स्वभाव में नही होता ।

ॐ चन्द्र मास २८ दिनों का होता है । अर्थात चन्द्र २८ दिनो में बारह राशियों की परिक्रमा पुर्ण कर लेता हैं । चन्द्र की इसी परिक्रमा के समय को चन्द्र मास कहते हैं । चन्द्र, पृथ्वी का उपग्रह माना जाता हैं और राशियों की परिक्रमा के साथ साथ ये पृथ्वी की भी परिक्रमा करता हैं । पृथ्वी का सबसे करीबी ग्रह होने से इसका पृथ्वी वासियों पर बहुत प्रभाव रहता हैं । महिलाओ का मासिक धर्म भी इसी के प्रभाव से २८ दिन का होता हैं तथा जिस महिला की कुण्डली में जैसा चन्द्र का बल होगा वैसा ही उसके मासिक धर्म का तिथिक्रम अथवा कमी बेशी वाला होगा ।

ॐ सूर्य बुनियादी चीजों का कारक हैं इसलिये जब ये कुण्डली में बलवान होता हैं तो शारिरिक शक्ति और बुनियादी अंगों को बलवान बनाता हैं, सूर्य क्योंकि सृष्टि कारक हैं इसलिये धर्म कारक हैं और अध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाता हैं । सूर्य ने देवताओ के लिये राहु से बैर मोल लिया था, अमृत मंथन के समय अमृत पान तो देवताओं ने किया परन्तु राहु के क्रोध शिकार सूर्य बनें , इस तरह जिनकी कुण्डली में ये बलवान होता हैं वो लोग राजसिक अंदाज के होते हैं और किसी के लिये भी शत्रुता मोल ले लेते हैं । कहते हैं, सूर्य ने राहु के कोप भाजन से क्षुब्ध होकर अपने तेज से सम्पूर्ण पृथ्वी को तपाना आरंभ किया, चारो ओर अग्नि वर्षा होने लगी और घबराये देवता दौड़े दौड़े ब्रहमा के पास पहुचें । ब्रहमा ने कश्यप ऋषि के पुत्र अरूण को सूर्य रथ का सारथी नियुक्त किया और इस तरह अरूण ने सूर्य के रथ को ऐक नियमित पथ पर चलाना आरभ किया और सृष्टि के कालचक्र का निर्माण किया । ये वही अरूण हैं जिनके दो पुत्र हुऐ ऐक सम्पाति और दूसरे जटायु, जटायु जिसने रावण द्वारा सीता हरण के समय सीता की मदद करने का प्रयास किया था और फलस्वरूप मारे गये थे । सूर्य की वंशावली बहुत ही विस्तृत हैं, सूर्य के पहले पुत्र हैं वैवस्वत मनु जो कि मानव सस्कृति के जनक माने जाते हैं , ईन्ही की वशांवली मे भगवान राम भी पैदा हुऐ थें । सूर्य सभी ग्रहो में राजा माने जाते हैं और इसी के तेज से प्रकाश और शक्ति ग्रहण करके सभी ग्रह अपना फल देते हैं । इस तरह सूर्य प्रत्येक प्रभाव में बुनियादी तत्व उत्पन्न करते हैं, सृष्टि के निर्माण में अपना सहयोग देने वाले सूर्य प्रत्येक मनुष्य के चरित्र निर्माण में भी अपना योगदान देते हैं । आगे जब आप अन्य ग्रहो के विषय में जानेगें तो आप देखेगें कि सूर्य के बिगैर किसी भी ग्रह का कोई फल और प्रभाव नही हैं ।

ॐ पंचतारा ग्रहों में सूर्य और चन्द्र को नही गिना जाता हैं । पंचतारा वो ग्रह माने जाते हैं जिनमें अपनी कोई क्रिया नही होती हैं, वे केवल पिंड के तौर पर माने जाते हैं । जैसे मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनी परन्तु सूर्य में अपनी क्रिया होती हैं और वो प्रकाश अथवा अग्नि प्रकट करता हैं । इसलिये सूर्य को सितारा कहा जाता हैं । चन्द्र, पृथ्वी की परिक्रमा करता हैं इसलिये उसे पृथ्वी का उपग्रह कहा जाता हैं । ना तारा और ना ही सितारा कहा जाता हैं ।

ॐ प्रकाश वर्ष, सूर्य के प्रकाश की एक वर्ष में गति को कहा जाता हैं । ३००,००० (तीन लाख) किलोमीटर प्रति सैकेन्ड के हिसाब से ये गति मापी जाती हैं और यही सूर्य के प्रकाश की गति हैं । एक प्रकाश वर्ष का अर्थ हैं ९,५००,०००,०००,००० (पिच्चानवे खरब) किलोमीटर ।

ॐ अष्टोतरी दशा १०८ वर्षो की होती हैं । अष्टोतरी अर्थात सौ के उपर आँठ ।

ॐ हिन्दु शास्त्रों के अनुसार आजसे करीबन पाँच हजार वर्ष पहले १८ फरवरी ३१०२ बी सी अर्धरात्रि को कलियुग आरंभ हुआ था । यह क्राईस्ट के जन्म से भी पहले

३१०१ वर्ष पूर्व की बात हैं । उस समय सातों ग्रह मेष राशि में थे ।

ॐ विक्रम संवत, राजा विक्रमादित्य के नाम से चलता हैं । स्कंद पुराण में लिखा हैं कि कलियुग के ३००० वर्ष बीत जाने पर विक्रमादित्य नाम का एक बहुत प्रतापी राजा हुआ था । जिसने अपने अतुल पराक्रम से विदेशी शको को भारत से खदेड़ दिया था । इसी विजयोपलक्ष में इन्हौने अपने नाम से विक्रम संवत चलाया था । उतर भारत में विशेष तौर पर विक्रम संवत का प्रयोग किया जाता हैं ।

ॐ समय को मापने का भारतीय ज्ञान का अपना ही सिंध्दांत हैं और वो सूक्ष्मातिसूक्ष्म समय की भी गणना करने में समर्थ हैं । कोमलातिकोमल कमल दल में एक तीक्ष्ण सुई के भेदन में जितना समय लगता हैं । उसे त्रुटी कहते हैं और एसी सौ त्रृटियो को मिलाकर एक लव बनता हैं । तीस लव से एक निमेष बनता हैं और २७ निमेष मिलाकर एक गुर्वाक्षर बनता हैं । १० गुर्वाक्षर से एक प्राण बनता हैं और ६ प्राण से एक विघिटिका बनती हैं । ६० विघिटिकाओं से मिलकर एक घटी बनती हैं और ६० घटी से एक दिनरात अथवा २४ घंटे पुर्ण होते हैं । तात्पर्य ये हैं कि एक दिनरात अथवा २४ घंटों में १७४६६०००००० त्रुटियां होती हैं । एसा भी कह सकते हैं कि अग्रेंजी हिसाब से ८६४०० सैकेन्ड होते हैं ।

ॐ गुलिक अथवा मांदी, शनी के पुत्र माने जाते हैं । दिन गणना अनुसार अथवा शास्त्र मत हैं कि दिन और रात्रि को आँठ भागो मे बाटा जाता हैं और प्रत्येक भाग का एक एक ग्रह स्वामी बनाया गया हैं । इसमें जिस भाग का स्वामी शनी माना जाता हैं उसे गुलिक अथवा मांदी कहते हैं । दिन के इस भाग को कठिन माना जाता हैं जैसे राहु काल को माना जाता हैं ।

ॐ शक संवत, राजा शालीवाहन के नाम से चलता हैं । क्राईस्ट के जन्म से ७८ वर्ष बाद शालीवाहन नाम का एक बहुत प्रतापी राजा हुआ था । जिसके नाम से शालीवाहन शकाब्द वर्ष आरंभ हुआ था जिसे हम साधारण भाषा में शक संवत कहते हैं । ये दक्षिण भारत में विशेष प्रचलित हैं । इसे वर्तमान में जानने का साधारण तरिका ये हैं कि ईस्वी सन् से ७८ वर्ष घटा दिये जाये तो शक संवत निकल आता हैं ।

ॐ जन्म समय पर चन्द्र के नक्षत्र में भ्रमण से दशाओं का निर्णय होता हैं । ज्योतिष में इन्ही दशाओं से मनुष्य का जीवनचक्र और उसके जीवन में घटने वाली घटनाओं को बता दिया जाता हैं । सूर्य की महादशा ०६ वर्षो की होती हैं । चन्द्र की १० वर्ष की, मंगल की ७ वर्ष की, राहु की १८ वर्ष की, गुरु की १६ वर्ष की, शनी १६ वर्ष की, बुध की १७ वर्ष की, केतु ७ वर्ष और शुक्र की २० वर्ष की दशा होती हैं ।

ॐ गुरूवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तो अमृत योग कहा जाता हैं । गुरु ग्रह सुख का कारक हैं और शनी दुख का कारक हैं । गुरूवार के दिन का स्वामी गुरु माना जाता हैं और पुष्य नक्षत्र का स्वामी शनी माना जाता हैं । गुरूवार के दिन अगर पुष्य नक्षत्र हो तो ये सुख और दुख के मिलन जैसी बात हो जाती हैं और इसे ही अमृत योग कहा जाता हैं ।

ॐ सूर्य से चन्द्रमॉ की १३ अशों की दूरी के बाद ऐक तिथि होती हैं । सूर्य और चन्द्रमाँ जब एक ही राशि में होते हैं तो अमावस्या होती हैं और जैसे जैसे चन्द्र आगे बढ़ता हैं और सूर्य से १३ अशों की दूरी बनाता हैं तो तिथि बनती हैं ।

ॐ सूर्य अपनी पत्नी की छाया के साथ ही दांपत्य जीवन बिताने लगे और फलस्वरूप सूर्य के दो पुत्र और हुऐ जिनके नाम थे मनु और शनी, कालातंर में इस मनु ने मानव संस्कृति की प्रगति में और अध्याय जोड़े और शनी के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता ही नही हैं , छाया पुत्र शनी महाराज के विषय में कौन नही जानता । बहरहाल शनी और मनु से छाया का विशेष प्रेम था और यम से प्रेम कम होने की वजह से यम इससे कुपित हो गये और विरोध करने लगे । इससे क्रोधित होकर छाया ने यम को शाप दे दिया, शापित यम अपने पिता सूर्य की शरण मे गये । सूर्य ने यम को शाप से मुक्ति तों दिला दी परन्तु माता के संतान के प्रति इस व्यवहार से चिंतत हो गये और क्रोधित होकर छाया के केश पकड़कर खीचां तो घबराकर छाया ने सब बता दिया और सूर्य को पता चला कि संज्ञा की जगह वे उसकी छाया से जीवन बीता रहे थें । सूर्य पछताते हुऐ अपने ससुर विश्वकर्मा के पास पहुचें और सारी बात बतायी, ऐसे में विश्वकर्मा ने उनके तेज को कम करने के लिये उनके तेज से विष्णु चक्र, शिव त्रिशूल, यम का दण्ड और देवताओं के सेनापती कार्तिकेय के पाश का निर्माण किया । इसके बाद सुन्दर और तपे तपायें सूर्य ऐक घोड़े के वेश में वंहा पहुचें जंहा संज्ञा घोड़ी के रूप में तपस्यारत थी । इस सुन्दर मिलन से फिर सूर्य के जुड़वा संतानें हुई जो अश्विनी कुमार के नाम से जाने गये । कालांतर में ईन्ही अश्विनी कुमारों के प्रयासों से देवताओं के चिकित्सक ऋषि च्यवनप्राश के नेत्रों की ज्योति वापस आयी ।

ॐ पंचाग शब्द पॉच + अंग से मिलकर बना हैं जिसका शाब्दिक अर्थ पॉच अंग होता हैं । तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण ये पॉच अंग मिलकर पंचाग बनता हैं । किसी भी महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ करने के लिये उतम समय ज्ञात करना इन्ही पॉच अगों पर निर्भर हैं जिसे मुर्हुत कहते हैं । हिन्दु एफीमेरीज में इन पॉच अंगो को दैनिक आधार पर ज्योतिष के सरल उपयोग हेतु दर्शाया जाता हैं । हिन्दु एफीमेरीज को पचांग भी कहते हैं ।

ॐ हिन्दु खगोल शास्त्र का समय अनुसंधान अनुसार ५०० ईस्वी से १००० ईस्वी पूर्व माना जाता हैं । इस समय के दौरान महान ज्योतिर्विदों एंव खगोलशास्त्रियों ने १८ सिध्दातों की रचना की थी । सूर्य, पितामह, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, पाराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीच, मनु, अंगिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु, शौनक आदि ऋषियो नें अपने अपने सिध्दांत रचे इसमें से कई ऋषियों ने संहिताऐ भी लिखी और कई ऋषियों ने सिध्दांत और संहिताऐं दोनो ही लिखे । महान ज्योतिषि वाराह मिहिर ने अपने कृत्य पंचसिंध्दातिका मे उर्पयुक्त सभी सिध्दातों में से केवल पॉच का ही विचार किया और कालांतर में वाराह मिहिर जोकि ज्योतिष के मूल स्तंभ के रूप में स्थापित हुए जिन्हौने बाद में कई रचनाए भी लिखी थी । आज भी ज्योतिष के विद्यार्थी अगर उनकी रचना बृहजातकम् ना पढ़े तो ज्योतिष की उच्च सीमाओं को नही छू पायेगें ।

ॐ प्रत्येक राशि के ३० अंश होते हैं । हमारी आकाश गंगा में अंडाकार गोलाई मे १२ राशियाँ हैं और सभी का मान ३६० अंश हैं ।

ॐ समय की गणना अत्याधिक आवश्यक गणना हैं इससे हम ब्रह्माण्ड की गतिविधियों और स्वंय अपने विषय में जान सकते हैं । खगोल शास्त्र के अनुसार समय को तारों और सूर्य की चाल से मापा जाता हैं । यह कार्य भारत में बहुत ही सूक्ष्मता से किया जाता रहा हैं परन्तु ईसा पूर्व ४६ ई. में रोमन साम्राज्य के बहुचर्चित जुलियस सीजर ने अपने नाम से जुलियन ईयर नामक समय गणना पध्दती स्थापित की थी जोकि बाद में ऑगस्टस के द्वारा परिष्कृत की गई थी । फिर भी इसमें त्रृटियॉ रह गई थी १७५२ में पोप ग्रेगोरी अष्टम ने इसके ११ दिनो की संचित त्रुटि को अनदेखा कर ग्रेगोरियन इयर के नाम से इसे प्रचलित कर दिया ।

ॐ हिन्दु ऋतुऐं अयन से संबंधित हैं शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म ऋतुऐं उतर अयन में होती हैं और वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतृऐं दक्षिण अयन में होती हैं । साधारण बोलचाल में इन्हे उतरायण और दक्षिणायन कहा जाता हैं । सूर्य जब मकर राशि से मिथुन राशि की तरफ संचार करता हैं तो इस समय को उतरायण कहते हैं और जब सूर्य, कर्क राशि से धनु राशि की ओर संचार करता हैं तो इसे दक्षिणायन कहते हैं । शास्त्रों के अनुसार उतरायण देवताओं का दिन कहलाता हैं और इसी समय के दौरान हिन्दु ज्योतिष के अनुसार षोडश सस्कारों को शुभ माना गया हैं । जबकि दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि कहा गया हैं ।

ॐ भारत में समय की गणना बहुत सूक्ष्मता से की जाती हैं और इसके कई विभाग बनायें गये हैं ताकि समय की गणना में कंहि त्रुटि ना रह जाये । इसमें सौर दिन,

सावन दिन, औसत सौर दिन, साम्पातिक दिन, नक्षत्र दिन और चन्द्र दिन के नाम से दिनों की गणना होती हैं । मासों के भी अलग अलग विभाग हैं जैसे सौर मास, चन्द्र मास, अमावस्या से अमावस्या तक चन्द्र मास और पुर्णिमा से पुर्णिमा तक होने वाला चन्द्र मास, नक्षत्र मास, सावन मास, असंगति मास, पातिक मास, नाक्षत्रिक मास, संयुति मास और सायन मास तथा इसी क्रम में वर्षो के भी विभाग हैं जैसे नाक्षत्रिक वर्ष, असंगति वर्ष, सौर वर्ष, सावन वर्ष, नक्षत्र वर्ष और चन्द्र वर्ष, चन्द्र-सौर वर्ष ईत्यादि । समय की गणना की भारतीय पध्दती इतनी सटीक हैं कि इसमें कोई त्रुटि बाकि नही रहती हैं और इससे प्रभावित होकर विश्व के कई देश इसकी सहायता से अपने यंहा समय की त्रुटियों को सुधारते हैं ।

ॐ जन्म कुडंली किसी समय विशेष और स्थान पर बनाया गया आसमान का नक्शा हैं जो राशिचक्र के बारह हिस्सों की योजना का चित्रण करता हैं । पूर्व में उदय होने वाली राशि को प्रारंभिक बिन्दु मानकर जन्म कुंडली किसी निश्चित समय और स्थान पर राशिचक्र में ग्रह, नक्षत्रों की स्थिति दर्शाती हैं । इस आसमान के नक्शे की आवश्यकता किसी शिशु के जन्म के समय या फिर किसी प्रश्न, घटना या विचार के समय पड़ती हैं ।

ॐ तारा डूबा हुआ हैं, का मतलब गुरु अथवा शुक्र का अस्त होना हैं । गुरु अथवा बृहस्पती का ऐक राशि में संचार १३ मास का होता हैं । बृहस्पती ग्रह को जीव भी कहा जाता हैं । बुध, सूर्य के सबसे नजदीक रहने वाला ग्रह हैं । राहु और केतु वक्रि गति से ही सचांर करते हैं । सूर्य और चन्द्र कभी भी वक्रि नही होते हैं । जन्म राशि का मतलब चन्द्र राशि होता हैं । प्लूटों को यम भी कहा जाता हैं । हमारी आकाशगंगा के पड़ौस में ऐक और सूर्य हैं, जिसे अल्फा सेंटौरी कहा जाता हैं ।

ॐ हुताशन ऐक तिथि का नाम हैं । करण, तिथि के आधे भाग को कहते हैं । हिन्दु केलेन्डर के अनुसार प्रती तीन वर्ष में ऐक अधिक मास होता हैं । सूर्य से चन्द्रमॉ की ऐक निश्चत दूरी प्रतिदिन ऐक योग का निर्माण करती हैं । मंगलवार के दिन आर्द्रा नक्षत्र हो तो अंगारक योग कहा जाता हैं । शनी से पंचमहापुरुष नामक शुभ शश योग बनता हैं ।

ॐ मंगल और गुरु, पृथ्वी और सूर्य के बीच के बाहरी ग्रह हैं । हर्षल, प्लूटों और नेपच्युन अत्याधिक बाहरी ग्रहों के नाम हैं । षडबल ग्रहों का मूलबल होता हैं । मंगल और शनी एक दूसरे के शत्रु ग्रह हैं। भृगु संहिता महान भृगु ऋषि की रचना हैं । अभिजीत को मिलाकर २८ नक्षत्र होते हैं । अभिजीत नक्षत्र का समय मूलरुप से मुर्हुत के कार्य में लिया जाता हैं । जन्म समय पर सूर्योदय से लग्न का निर्णय होता हैं ।

ॐ इंग्लैंड की रायल एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी ने हाल ही में एक नई राशि की खोज की हैं जिसे 'आफ्यूशस' नाम दिया गया हैं । पाश्चात्य ज्योतिष पध्दति के अनुसार यह राशि वृश्चिक और धनु राशि के बीच में मानी गई हैं । वैसे यह खोज खगोलीय अधिक हैं और ज्योतिषिय कम हैं । अगर बहुत अधिक खोज और अध्यन इस पर किया भी गया तो इसका प्रभाव पाश्चात्य ज्योतिष जगत पर होगा भारतीय ज्योतिष जगत पर इसका प्रभाव नही पड़ेगा । इसलिये कि भारतीय ज्योतिष की व्यापकता और तकनीकी सक्षमता अपने आप में संम्पुर्ण हैं । भारतीय ज्योतिष पध्दति समय की परिक्षाओं पर खरी उतरी हैं और इसकी अद्‌भुत फलादेश क्षमता ने कई पश्चिमी देशों के ज्योतिषियों को अपनी ओर आकृष्ट किया हैं ।

ॐ महाभारत में कहा हैं, "सम्पुर्ण ब्रह्माण्ड सृष्टा की इच्छा से गतिशील हैं, किन्तु यह भाग्य से नियंत्रित हैं । यह स्वतंत्र नही हैं । कोई भी मनुष्य अपने भाग्य का विध ाता खुद हैं । पूर्व जन्मों मे किये गये कर्म इस जन्म में फल देते हैं । आत्मा प्रारब्ध को लेकर फिर जन्म लेती हैं । शुध्द एंव नैतिक कर्मो से ही मनुष्य परमात्मा को पा सकता हैं । अच्छे और बुरे कर्मो के सम्मिश्रण से मनुष्य जीवन प्राप्त होता हैं । एन्द्रिय एंव भ्रष्ट व्यसनों की आसक्ति से पशु जीवन ही मिल पाता हैं । भाग्य व कर्म परस्पर निर्भर हैं । बुध्दीमान व्यक्ति शुभ व महान कार्य करने वाले होते हैं । केवल निर्वीय पुरुष ही भाग्य की आराधना करते हैं"।

ॐ सूर्य जीव के अंदर आत्माके रूप में रहता हैं इसके अलावा प्रत्येक मूल चीज पर सूर्य का प्रभाव रहता हैं जैसे हडडीया किसी भी जीव के शरीर को खड़ा करने में सहायता करती हैं अर्थात शरीर के मूल मे हडडीया हैं । हडडीयां ना हो तो शरीर खड़ा नही हो सकता, शरीर को चलाने के लिये इसमें गति का होना आवश्यक हैं इसके लिये दिल से रक्त संचालन होता हैं । अब दिल की धड़कन और दिल का शरीर को रक्त संचालन शरीर को जीवित रखने में विशेष भूमिका निभाता हैं अर्थात दिल शरीर के गतिमान रहने का मूल हैं । इन सभी चीजों में जोकि शरीर का मूल मानी जाती हैं, सूर्य का प्रभाव माना जाता हैं, हार्ट अटैक सूर्य के निर्बल होने से भी होता हैं, स्लीप डिस्क अथवा हडडीयों की कमजोरी सूर्य के निर्बल होने से होती हैं । बहरहाल ये तो हैं इसके कुछ वैज्ञानिक पहलू जोकि इसके प्रभाव को बताते हैं, परन्तु सूर्य का प्रभाव यही पर समाप्त नही हो जाता हैं इसके विषय में और जानने के लिये हमे शास्त्रों और पुराणों को और देखना होगा । सूर्य की पत्नीयों में से संज्ञा के सबसे बड़े पुत्र का नाम वैवस्वत मनु हैं जिसे मानव संस्कृति का जनक माना जाता हैं, आज हम जिस मानव संस्कृति पर गौरव करते हैं इसे वैवस्वत मनु ने आरंभ किया था । इसके अलावा सूर्य की पत्नी संज्ञा ने ही जुड़वा संतानों को भी जन्म दिया था इनके नाम हैं यम और यमी, अब देखें कमाल, यम अर्थात यमराज और यमी अर्थात यमुना नदी । यमराज मृत्यु के स्वामी हैं और यमुनानदी जीवन दायी जल की स्वामिनी हैं, अब यंहा शास्त्रों का ये संकेत हैं कि मृत्यु और जीवन दोनो ही सूर्य के प्रभाव से हैं । जुड़वा होने के कारण इन दोनो भाई बहन में बहुत प्रेम हैं, अब मृत्यु का जीवन से प्रेम तो जग जाहिर हैं जन्म के पहले दिन से ही मृत्यु उससे मिलने को बेचैन रहती हैं । बहरहाल इन दोनो भाई बहन के प्रेम को हम दीपावली के बाद भाईदूज के दिन बहुत धूमधाम से मनाते हैं । सूर्य बहुत तेजस्वी और प्रचंड हैं और इसे नंगी आंखों से देखना अंसभव हैं । यही हाल सूर्य की पत्नी संज्ञा का हुआ वो सूर्य के साथ रहते हुऐ उसके तेज को सहन नही कर पाती थी इसलिये ऐकदिन उसने अपने ही अंदर से अपनी छाया को प्रकट किया और उसे अपने पती सूर्य और बच्चों की देखरेख को कहकर स्वंय अपने पिता विश्वकर्मा के पास चली गई तथा उसे अपनी व्यथा कथा सुनाकर अज्ञातवास में चली गई। बाद में उसने उतर में हिमालय की घाटियों ऐक घोड़ी का रूप धारण किया और तपस्या में लीन हो गई ।

ॐ जिस मास में सूर्य संक्राती नही होती हैं उसे अधिक मास कहते हैं । लोक व्यवहार में इसे अधिक मास, मलमास, अथवा पुरुषोत्तम मास कहते हैं । अधिक मास दो वर्ष, चार महिने और सोलह दिनो में आता हैं । अधिक मास में फल प्राप्ती की कामना से किये कार्य वर्जित माने जाते हैं । इसमें निष्काम भाव से सेवा के कार्य करने चाहिये इससे पुण्य की प्राप्ती होती हैं और अक्षय फल की प्राप्ती होती हैं ।

ॐ चैत्र सुदी प्रतिपदा (गुडी पडवा) अक्षय तृतिया, विजयादशमी और कार्तिक सुदी (नववर्ष) यह चार मुर्हुत परम शुभ माने जाते हैं । इस मुर्हुत मे किये गये शुभ कार्य के लिये पंचाग शुध्दी अथवा विचार विर्मश की आवश्यकता नही हैं ।

ॐ मंगलवार को पड़ने वाली अमावस्या को भौमवती अमावस्या एंव सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या को सोमवती अमावस्या कहा जाता हैं । भौमवती अमावस्या को गंगा स्नान करने से एक हजार गोदान का पुण्य मिलता हैं और सोमवती अमावस्या को पुण्य कार्य करने से भी विशेष फल की प्राप्ती होती हैं ।

ॐ किसी दिन अगर मुर्हुत के लिये शुभ योग, शुभ लग्न, चन्द्रबल, गुरुबल, योगिनी, राहु अथवा काल बल ना मिल सके और उस दिन पुष्य नक्षत्र हो तो सभी विघ्नो को दूर कर देता हैं और किसी भी कार्य के करने से शुभ फल मिलता हैं । पुष्य नक्षत्र में सभी कार्य शुभ माने जाते हैं परन्तु विवाह कार्य के लिये यह नक्षत्र शुभ नही माना जाता हैं क्योकि शास्त्रों में इस नक्षत्र को ब्रहमा द्वारा शापित बताया गया हैं ।

ॐ घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उतरा भाद्रपद और रेवती ये पॉचों नक्षत्र पंचक नक्षत्र माने जाते हैं । इन नक्षत्रों में तृण काष्ठा आदि का संग्रह, दक्षिण दिशा में

यात्रा और घर की छत, छप्पर आदि डालना वर्जित माना गया हैं ।

ॐ फाल्गुन मास में ही आमलकी ऐकादशी भी होती हैं, विष्णु भगवान के थूक से उत्पन्न ऑवंले के वृक्ष को आमल कहते हैं । जब ब्रहमा सृष्टि की उत्पत्ती कर रहे थे उसी समय विष्णु भगवान के थूक से उत्पन्न इस आमल वृक्ष को जो कई गुणो से भरपुर हैं देवताओं, गर्धवों, यक्षों और नागों ने बहुत श्रध्दा से देखा और इसकी बहुत प्रशंसा की, कालातंर में मनुष्यों को इसके गुणों का पता चला । स्वंय भगवान विष्णु ने कहा हैं कि फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष में आने वाली आमलकी ऐकादशी का व्रत करने से मनुष्य सब दुखों से छुटकारा पाकर विष्णु लोक को प्राप्त होता हैं ।

ॐ सूतपुत्र अर्थात ब्राहमणी स्त्री से क्षत्रिय पती द्वारा उत्पन्न संतान कों सूतपुत्र कहते हैं । वेदों, पुराणों और शास्त्रों को पढ़कर कथा सुनाने वाले सूतपुत्र कई प्रकार के चमत्कारों और उपायों के विषय में बतातें हैं । वेदों, पुराणों और शास्त्रों के विषय अथवा ऐकादशी के व्रत के विषय में भी पदम पुराण में सूत पुत्र ही बताते हैं ।

ॐ महाभारत के समय जब श्रीकृष्ण गीता सुनाते हैं और चार वर्णो ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की बात बताते हैं और इनके धर्म और कर्म के विषय में बताते हैं । तो उसी समय के आसपास सूतपुत्रों को भी कथा वाचन का अधिकार मिला हुआ था । दानवीर कर्ण ऐसे ही सूतपुत्र अधिरथी का पुत्र था । जब कुन्ती उससे मिलने भागीरथी के तट पर गयी थी तब भी कर्ण वेद ही पढ़ रहा था ।

ॐ महाभारत ग्रन्थ का नाम पहले "जय" था, बाद में वैशम्पायन ऋषि ने कुछ और सूत्र जोड़कर इसे नाम दिया "जयभारत" कालातंर में फिर ऋषि सौति ने इसमें और बढ़ोतरी की तथा इसको नाम दिया "महाभारत" ।

ॐ तुलसी के पौधे में ऐक विशेष सुगन्ध होती हैं जिससे कई बीमारियों के कीटाणुं और विषधर नाग उसके करीब नही आतें । प्राचीन समय से भारतीयों के घर परिवार में तुलसी रखने की परंम्परा रही हैं ।

ॐ पूर्वी समुन्द्र से पश्चिमी समुन्द्र हिन्दमहासागर के किनारें बसे भारत भूखण्ड को अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानने वाला व्यक्ति हिन्दु हैं । हिंसा से दूर रहने वाला, श्रेष्ठ आचरण करने वाला, वेद, गाय और भगवत्प्रतिमाओं की उपासना करने वाला व्यक्ति हिन्दु हैं । हिन्दु शब्द जातिवाचक ना होकर स्थानवाचक हैं । प्राचीन समय से ही विदेशों में हिन्दुस्तान को हिन्द कहते थें परन्तु बोलचाल में और कालांतर में हिन्दीया कहने लगे फिर एच अक्षर साईलैन्ट हो गया और हिन्दीया को ईन्दीया कहने लगे और अब ये इण्डीया हो गया हैं ।

ॐ जन्म कुण्डली में ग्रहों के योग कुण्डली के स्तर को उॅचा उठाने का कार्य करते हैं । इनमें गजकेसरी योग सबसे उच्च और परम शुभ माना जाता हैं मंत्रीयों और उच्च पदस्थ अधिकारियों की कुण्डली में ये योग देखा जा सकता हैं । जिस कुण्डली में गजकेसरी योग होता हैं उसके जीवन में उसे यश, मान, सम्मान और धन की सहज ही प्राप्ती होती हैं और मृत्यु के बाद भी उसके यश में कमी नही आती और उसके नाम का गुणगान होता हैं। यह योग चन्द्र और गुरु के ऐकदूसरे से केन्द्र में होने से होता हैं वर्तमान में यह योग प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की कुण्डली में हैं ।

ॐ जन साधारण में शनी के प्रति बहुत भय व्याप्त हैं, ऐसा माना जाता हैं कि शनी दुख और तकलीफ का कारक ग्रह हैं । परन्तु मूल सिंध्दात ये हैं कि शनी कुण्डली में बलवान होता हैं तो दुख कम करता हैं और निर्बल होता हैं तब दुख बढ़ाता हैं । बहरहाल शनी कुण्डली में मकर, कुम्भ अथवा तुला राशि में और केन्द्र में हो तो शनी से शश नामक महापुरूष योग बनता हैं । जिनकी कुण्डली में शश योग होता हैं वे लोग अपने जीवन में उम्र के बढ़ने के साथ उन्नति करते हैं और अंतत अपने नगर, प्रांत अथवा देश के प्रमुख बनते हैं । शश योग का मूलफल ही आयु के द्वितिय भाग में मिलता हैं और मृत्यु पर्यन्त तक कायम रहता हैं ।

ॐ पुराणों मे 'आदि सूर्य' की कल्पना की गई हैं और कहते हैं कि परमपिता ब्रहमा के मुख से 'ॐ' प्रकट हुआ , यही सूर्य का आदि रूप और सूक्ष्म रूप था । फिर तीन अक्षर उत्पन्न हुऐ " भुः भवः स्वः " ये तीनो अक्षर 'ॐ' से मिले और सूर्य का स्वरूप प्रकट हुआ । इसके बाद महः जनः तपः और सत्यम से मिलकर इसमे प्रकाश और असहनीय तेज उत्पन्न हुआ जिसने दसो दिशाओं को प्रकाशित कर दिया सृष्टि के आरंभ में प्रकट होने के कारण इसका ऐक नाम आदित्य हैं , इसके और बहुत से नामो की चर्चा आगे आयेगी । हमारे शास्त्र सूर्य की व्याख्या से भरे पड़े हैं, सूर्य हमारे लिये भविष्य का सूचक हैं , आने वाले समय का सूचक हैं और तो और सूर्य को शास्त्रों में जगत पिता भी कहा गया हैं । ऋग्वेद में सर्वाधिक विस्तार से सूर्य के विषय में बताया गया हैं, सामान्यता पुराणों और शास्त्रों में सूर्य के विषय में बहुत बताया गया हैं परन्तु ऋग्वेद इस विषय में विशेष रूप से बताता हैं जैसे शास्त्रों में बताया गया हैं कि सूर्य की तीन पत्नीयां थी जिनके नाम संज्ञा , प्राज्ञी और प्रभा हैं परन्तु ऋग्वेद कहता हैं कि त्वष्टा ऋषि की पुत्री शरायु से भी सूर्य का विवाह हुआ था । ऋग्वेद में सूर्य के सात नाम हैं, विष्णु पुराण में सूर्य के बारह नाम हैं , अमर कोश नामक ग्रन्थ में इसके ४७ नाम हैं और ब्रह्म पुराण में इसके १०८ नाम हैं । सूर्य सृष्टि के आरंभ से हैं इसलिये इसमें सृष्टि के बहुत सारे रहस्य छिपे हैं । पृथ्वी पर जीवन ही सूर्य के होने से हैं और जब तक सूर्य हैं जीवन और जीव सदा पृथ्वी पर विचरण करते रहेगें इस तरह सूर्य ही हमारे होने का कारण हैं । अब ऐसे में पुराण और शास्त्र सूर्य को जगत पिता कहते हैं तो बिल्कुल ठीक ही कहते हैं । हमारे दिनरात, मास, वर्ष और मौसम सभी कुछ सूर्य के होने से हैं, ज्योतिष शास्त्र में सूर्य को कुण्डली का मूल माना जाता हैं । कुण्डली मे सूर्य के बलवान होने से उज्चल भविष्य के विषय में बताया जाता हैं और सूर्य के बलवान होने से जीव के आत्मिक बल के होने की बात कही जाती हैं क्योंकि सूर्य का ऐक रूप आत्मा भी हैं ।